<u>सनातन नव संवत्सर की शुभकामनाएं</u>

<u>(विक्रम संवत 2078)</u>

मानक नव अपना लिए, नव संदर्भित बिंदु ।
सविता हुए उपेक्ष्य से नहीं समादृत इंदु ।
भूल चुके उज्जैन को, रहा ग्रीनविच याद ।
अर्द्धरात्रि प्रारभ्य अब हुआ समय का नाद ।

रवि का जब अश्विनी में, होता शुभद प्रवेश ।
तब आता नववर्ष तव, धार भव्यतर वेश ।
सौर सत्य को त्याग कर, मिथ्या ही नववर्ष ।
मना रहे अज्ञानवश, शीत काल में हर्ष ।

उषाकिरण घोषित करे, पुनः दिनोदय काल ।
दिनकर अभिमुख विनत हो, नर कृतज्ञ का भाल ।
जो कुछ है पश्चिम उदित, उसकी वरता भ्रांति ।
आशु त्याज्य अब हो चली, यदि वांछित है क्रांति ।

विमल बुद्धि, हितकर विनय, अनयभीति नय प्रीति ।
वर्धित हों नववर्ष में, पारस्परिक प्रतीति ।
राष्ट्र मान सर्वोच्चता, बने आचरण रीति ।
रहे अप्रतिकृत अब नहीं, रिपु कृत क्षुद्र अनीति ।

भोपाल - शिव कुमार मिश्र

12-04-2021